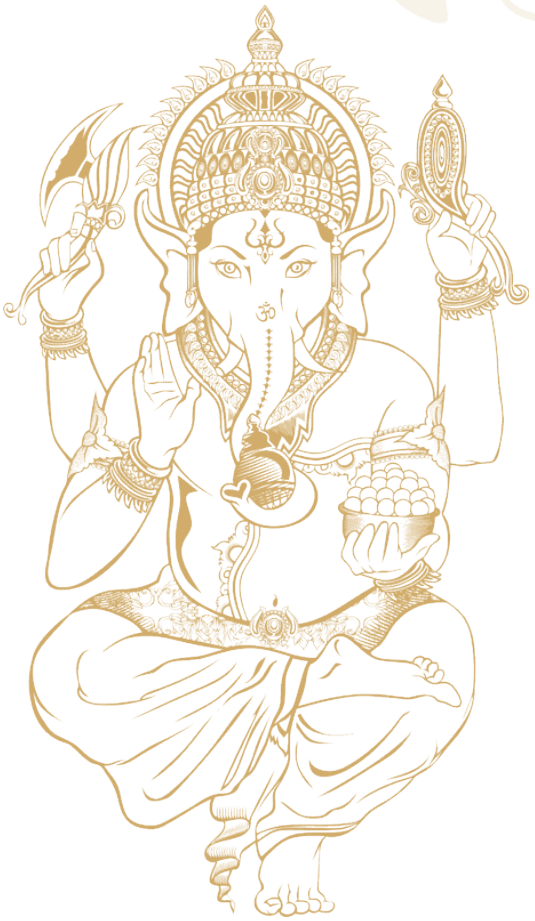

24 Feb 2026

06:14 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121383901

तिथि 24/02/2026 **समय** 18:14:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:27
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:10:30 घं
वेलान्तर	00:13:13 घं
सूर्योदय	06:51:43 घं
सूर्यास्त	18:17:24 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	8
नक्षत्र	रोहिणी
योग	वैधृति
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ओ-ओमप्रकाश
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	चंद्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

चन्द्र 8वर्ष 7मा 12दि
चन्द्र
24/02/2026
08/10/2034

	24/02/2026
मंगल	09/03/2026
राहु	08/09/2027
गुरु	07/01/2029
शनि	08/08/2030
बुध	07/01/2032
केतु	07/08/2032
शुक्र	08/04/2034
सूर्य	08/10/2034

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 0मा 11दि
सिद्धा
24/02/2026
07/03/2032

सिद्धा	18/07/2026
संकटा	06/02/2028
मंगला	17/04/2028
पिंगला	06/09/2028
धान्या	07/04/2029
भ्रामरी	16/01/2030
भद्रिका	06/01/2031
उल्का	07/03/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:45:48	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	---	0:00			
सूर्य			11:41:26	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.28	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			11:50:37	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	मंगल	मूलत्रिकोण	1.30	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	00:59:52	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.48	कलत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			28:05:19	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	0.95	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		21:12:41	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.24	भ्रातृ	धन	क्षेम
शुक्र			23:24:52	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	मित्र राशि	1.29	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि			06:58:19	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.44	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		14:45:20	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		14:45:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

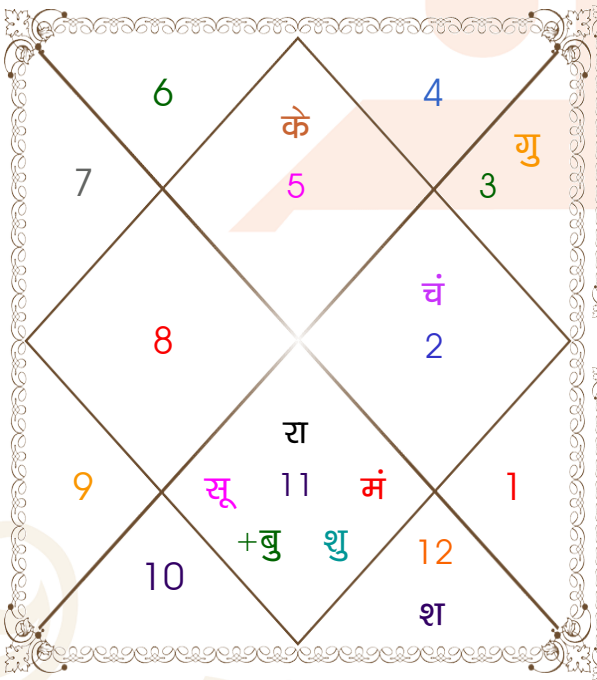

चन्द्र कुंडली

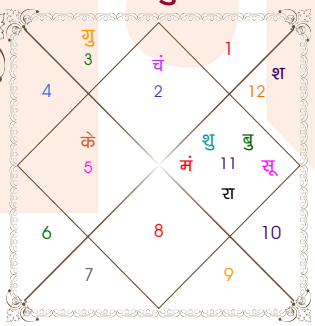

नवमांश कुंडली

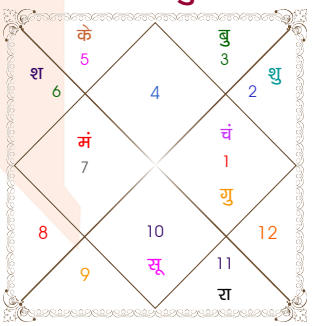

सर्वाष्टकवर्ग

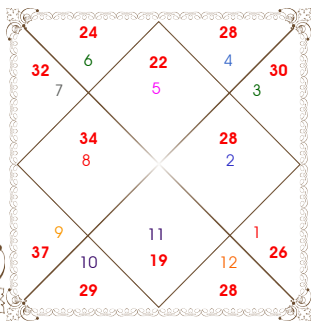

दशमांश कुंडली

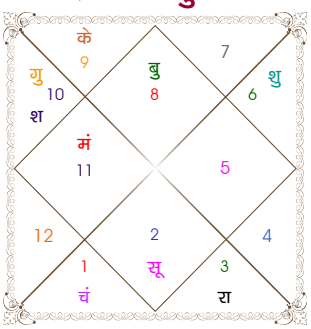

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, योनि सर्प, नाड़ी अन्त्य वर्ण वैश्य तथा वर्ग गरूड़ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ओ" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा ओमप्रकाश।

आप आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा भगवान में आपकी पूर्ण आस्था होगी। धर्म के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। तथा धर्म सम्बन्धी कार्यों की आपको पूर्ण जानकारी होगी। आपका स्वरूप दर्शनीय तथा स्वभाव सरल एवं सुन्दर होगा। बोलने में आप अत्यन्त चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल उचित प्रत्युत्तर आप चतुरता से देंगे। आप बुद्धिमान होंगे तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को भी स्पष्ट रूप से दूसरे लोगों को समझाने की कला में होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। इसका अभाव नहीं रहेगा। कृतज्ञता के गुण से आप सुशोभित रहेंगे। यदि कोई व्यक्ति आपका कोई कार्य करेगा तो आप हृदय से उसका आभार प्रदर्शन करेंगे। राज्यमंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आप प्रिय वाणी बोलेंगे जो सबको अच्छी लगेगी। आप आजीवन सत्य का पालन करेंगे तथा सत्य ही बोलेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

शरीर आपका सामान्य रूप से नीरोग रहेगा। उत्साह से आप हमेशा पूर्ण रहेंगे तथा जो भी कार्य करेंगे उसे सोत्साह सम्पन्न करेंगे। आपका आचरण उत्तम होगा तथा किसी को भी आपके आचरण से कोई शिकायत या परेशानी नहीं होगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

पवित्रता या शुद्धता का आप हमेशा पालन करेंगे। चाहे वह शारीरिक हो चाहे आत्मिक आपका यह सिद्धान्त होगा कि शरीर को जितना साफ रखना चाहिए उतना ही शुद्ध एवं पवित्र आत्मा को भी होना चाहिए। इसके लिए आप आजीवन प्रयत्न शील रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी। अतः जो भी कार्य करेंगे चंचलता से नहीं अपितु एकाग्रता से सम्पन्न करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

शारीरिक रूप से आप प्रायः स्वस्थ ही रहेंगे। साथ ही अन्य जनों को जानने वाले तथा ज्ञानी भी होंगे।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आप लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा स्थूल गालों से युक्त होंगे। आपके नेत्र बड़े तथा मोटे होंगे। स्वाभाविक रूप से आलस्य का समावेश

भी आपके अन्दर रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। उनकी प्रत्येक बात को शिरोधार्य करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे। आप अच्छी बुद्धि से युक्त तथा वात कफ के स्वामी होंगे। आपके बाल घुँघराले तथा प्रकृति दानशीलता की रहेगी। आपका जीवन प्रायः सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्व प्रकार के सुखों का उपयोग करेंगे। दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही आपके स्वभाव में होगी। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा। धनागम प्रचुरमात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासमय हो जाएगी। सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। आपके अन्दर तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपकी मुखाकृति तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्ण व्यतीत होंगे। समाज के सभी वर्गों से आपका विशेष लगाव रहेगा। क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना से आप युक्त रहेंगे। प्रारम्भिक या बचपन की अवस्था में आपको कष्ट सहने पड़ेंगे तथा कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, मुख या बगल में तिल, मस्सा लहसन या घाव का निशान हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति पुत्रों से अधिक होंगी तथा आचरण एवं व्यवहार प्रशंसनीय रहेगा। आप आजीवन धन का उपयोग करेंगे तथा यश भी आपका चारों तरफ फैलेगा।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने काले घुँघराले बालों से युक्त रहेंगे। सैक्स के प्रति

आपका आकर्षण अधिक मात्रा में रहेगा। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होगी तथा गलत सही का निर्णय करने में सक्षम रहेंगे। आपकी चाल देखने योग्य होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ, सुडौल एवं पुष्ट होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इसके पालन करने का आप आजीवन प्रयत्न करते रहेंगे। इस तरह अच्छे तथा पुण्य कार्य आप हमेशा करते रहेंगे तथा इन्ही कार्यों से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बडी होगी तथा आप विलास सहित गमनप्रिय होंगे। आप कष्टों को सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से भी सम्पन्न हो सकते हैं। धन एवं ऐश्वर्य से आजीवन समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी तथा स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप सुस्वभाव से युक्त तथा विष्णु एवं शिव की पूजा करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति से युक्त होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी तथा नियमपूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। अभिमान का अस्तित्व भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। धन का आपके लिए प्रचुर मात्रा में अर्जन होता रहेगा। इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आपके हृदय में दया तथा करूणां का भाव जागृत रहेगा जिसके कारण आप यत्न पूर्वक दीन दुखियों की सेवा करते रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों के जानने वाले या कलाओं में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा शरीर कान्ति युक्त होगा। आप बहुत से लोगों को सुख पहुँचाने वाले होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जीवन पर्यन्त अपार धन के स्वामी बने रहेंगे। आप एक अच्छे निशानेबाज भी बन सकते हैं। शरीर आपका गौरवर्ण का होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने में सफल रहेंगे। साथ ही नेत्र भी आपके बड़े-बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण कभी-कभी आपको अत्यधिक मात्रा में क्रोध आएगा। साथ ही प्रचण्डता का भाव भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा जिससे आपको सहानुभूति या लगाव नहीं होगा उसके साथ बहुत ही कठोर व्यवहार करेंगे। साथ ही आप किसी दूसरे के द्वारा किए गए उपकार को अल्प ही स्वीकार करेंगे। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा जिह्वा भी आपकी स्वाद लोलुप रहेगी खट्टे, मीठे, तीखे स्वाद आपको अत्यधिक प्रिय होंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि स्थित चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य 5,10,15 तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन, क्रय विक्रय आदि न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें अन्यथा अशुभ फल ही होंगे। साथ ही इन दिनों शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक व्याकुलता बढ़ रही हो, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में वाधा तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही आपको श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप स्वयं या किसी योग्य विद्वान से

करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप भगवान शिव या विष्णु की भी आराधना या पूजा कर सकते हैं। ऐसा करने से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।